International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 870-872

राजा राममोहन राय का आधुनिक भारत के जनक के रूप में विश्लेषण

Dr. Sanjeet
Lect. in History, G.S.S.S. Baniyani, Rohtak, Haryana, India

सारांश
भारत के स्वाधीनता संघर्ष में राजा राममोहन राय का योगदान अविस्मरणीय है और अधिकांश बुद्धिजीवी और विद्वान उन्हें आधुनिक भारत का जनक कहकर सम्मान देते हैं। जिस समय राजा राममोहन राय ने समाज सुधार का बीड़ा उठाया तो उस समय हिन्दू धर्म विकृत और पथभ्रष्ट होने की कगार पर था। सर्वत्र बहुदेववाद और मूर्तिपूजा का बोलबाला था। सामाजिक एकता भी नष्ट हो चुकी थी और विदेशी आक्रमणों के कारण राजनैतिक हालात भी ठीक नहीं थे। इसलिए भारतीय दर्शन को आधार बनाकर राजा राममोहन राय ने एकेश्वरवाद की सत्ता पर बल दिया और घोर निराशा के वातावरण में डूबे भारतीय समाज को उभारने का बीड़ा उठाया। चूंकि परम्परावादी व रूढिवादी सोच के लोगों ने उन्हें कई बार चुनौती दी, फिर भी उन्होंने अपनी भावी रणनीति को अमलीजामा पहनाना जारी रखा। उन्होंने पत्रकारिता के माध्यम से भारतीय जनमानस की सेवा का निश्चय किया और अंग्रेजी भाषा को भारतीय हितों के अनुकूल बताय उनके प्रयासों से कई बार ब्रिटिश सरकार ने मताधिकार का विस्तार करने में भी रूचि दिखाई। सुरेन्द्रनाथ बैनर्जी ने तो उन्हें संवैधानिक आन्दोलन का जनक तक कहा है। प्रस्तुत शोध पत्र में राजा राममोहन राय के आधुनिक भारत के निर्माण में योगदान का विश्लेषण किया गया है।

मुख्य शब्द : आधुनिक भारत पत्रकारिता, भारतीय समाज, समाज सुधार, ब्रह्म समाज, सामाजिक परिवर्तन, महिलाओं की स्थिति।

प्रस्तावना
राजा राममोहन राय को 'नवीन मानवता और नये भारतवर्ष' का जन्मदाता कहा जाता है। वे ब्रह्म समाज के संस्थापक, भारतीय भाषायी प्रेस के प्रवर्तक, जनजागरण और सामाजिक सुधार आन्दोलन के प्रणेता तथा बंगाल में नव–जागरण युग के पितामह थे। सती की प्रथा को बंद कराने में उनकी अहम भूमिका रही है। राजा राममोहन राय एक महान विद्वान और स्वतंत्र विचारक थे। मुगल शासको ने उन्हें राजा की उपमा दी श्री। धार्मिक और सामाजिक विकास के क्षेत्र में राजा राममोहन राय का नाम सबसे अग्रणी है। उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और पत्रकारिता के कुशल संयोग से दोनों क्षेत्रों को गति प्रदान की। राजा राममोहन राय ने तत्कालीन भारतीय समाज की कट्टरता, रूढिवादिता और अंधविश्वासों को दूर करके उसे आधुनिक बनाने का प्रयास किया। राजा राममोहन राय की दूरदर्शिता और वैचारिकता के सैकडों उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं।[1] वास्तव में राजा राममोहन राय का भारतीय सामाजिक और धार्मिक पुनर्जागरण के क्षेत्र में विशिष्ट स्थान है। उन्होंने भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम और पत्रकारिता के कुशल संयोग से दोनों क्षेत्रों को गति प्रदान को। उनके आंदोलनों ने जहाँ पत्रकारिता को चमक दी, वहीं उनकी पत्रकारिता ने आन्दोलनों को सही दिशा दिखाने का कार्य किया। राजनीति, लोक प्रशासन, शिक्षा सुधार, समाज सुधार, धार्मिक पुनर्जागरण के क्षेत्रों में किये गए उनके कार्य उनको भारत की एक महान विभूति की श्रेणी में खड़ा करते हैं।

आधुनिक भारत के निर्माता के रूप में
राजा राममोहन राय एक महान ऐतिहासिक विद्वान है, जिन्होंने भारत को आधुनिक भारत में बदलने के लिए काफी संघर्ष किये थे और सदियों से चली आ रही हिन्दू कुप्रथाओं का विनाश किया था। समाज में परिवर्तन लाने के लिए उन्होंने बहुत से सामाजिक काम किये और देश में महिलाओं की स्थिति को मजबूत बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान भी रहा है। उन्होंने इंग्लिश, विज्ञान, पश्चिमी औषधि और तंत्र ज्ञान की शिक्षा प्राप्त की थी। हिन्दी के प्रति उनका अगाध स्नेह था।[2] वे रूढिवाद और कुरीतियों के विरोधी थे लेकिन संस्कार, परंपरा और राष्ट्र गौरव उनके दिल के करीब थे। वे स्वतंत्रता चाहते थे लेकिन चाहते थे कि इस देश के नागरिक उसकी कीमत पहचानें। ब्रिटिश सरकार ने उनकी याद में एक स्ट्रीट का नाम बदलकर राजा राममोहन वे भी रखा, जो उनके लिए एक सम्मान का प्रतीक है।

अतः राजा राममोहन राय ने भारतीय समाज में परिवर्तन लाने के लिए बहुत से सामाजिक काम किये और देश में महिलाओं की स्थिति को मजबूत बनाने में उनका महत्वपूर्ण योगदान भी रहा है। राजा राममोहन राय ने सती प्रथा का खुलकर विरोध किया था। वे एक महान विद्वान थे, जिन्होंने काफी किताबों का भाषा रूपान्तर किया था। राजा राम मोहन राय ने भारत में स्वतंत्रता आन्दोलन और पत्रकारिता के कुंशल संयोग से दोनों क्षेत्रों को गति प्रदान की। उनके आन्दोलनों ने जहाँ पत्रकारिता को चमक दी, वहीं उनकी पत्रकारिता ने आन्दोलनों को सही दिशा दिखाने का कार्यं किया। राजा राम मोहन राय के जीवन की सबसे बडी उपलब्धि थी– सती–प्रथा का निवारण। 1828 में राजा राममोहन राय ने ब्रह्म समाज की स्थापना की थी।[3] इसके अतिरिक्त राजाराममोहन राय की दूरदर्शिता और वैचारिकता के सैंकड़ों उदाहरण इतिहास में दर्ज हैं। हिन्दी के प्रति उनका अगाध स्नेह था। वे रूढ़िवाद और कुरीतियों के विरोधी थे लेकिन संस्कार, परम्परा और राष्ट्र गौरव उनके दिल के करीब थे। वे स्वतंत्रता चाहते थे लेकिन चाहते थे कि इस देश के नागरिक इसकी कीमत पहचानें।

[1] विजय चौगुले, राजा राममोहन राय, 1995.

[2] विनोद तिवारी, राजा राममोहन राय, 2005.

[3] संजय गोयल, राजा राममोहन राय, 1999.

राजा राममोहन राय के धार्मिक सुधार कार्यों में मूर्तिपूजा तथा कर्मकाण्ड का विरोध रहा है। हिन्दू धर्म की धार्मिक कुप्रथाओं एवं अन्धविश्वासों का उन्होंने जमकर विरोध किया। वे एक सच्चे समाज सुधारक थे, अतः उन्होंने उन सब कुरीतियों का विरोध किया, जो मानवता के विरुद्ध थीं । इनमें सती प्रथा, अनमेल विवाह, बहुविवाह, जातिप्रथा का विरोध शामिल था। जाति प्रथा, दहेज प्रथा और बाल विवाह का विरोध, महिलाओं की शिक्षा और अंग्रेजी भाषा की शिक्षा की जरूरत पर उन्होंने विशेष ध्यान दिया। सती के नाम पर बंगाल में औरतों को जिन्दा जला दिया जाता था। उस समय बाल विवाह की प्रथा भी थी। कहीं कहीं तो 50 बर्ष के व्यक्ति के साथ 12–13 वर्ष की बच्ची का विवाह कर दिया जाता आ। और फिर अगर उस व्यक्ति की मृत्यु हो जाती श्री तो उस बच्ची को उसकी चिता पर बैठा कर जिन्दा जला दिया जाता था।[4]

इस प्रकार की अनेकों कुरीतियों के खिलाफ राजा राम मोहन राय ने अपने ही लोगों से जंग लड़ी। इसके लिए उनका बहुत विरोध भी हुआ। लोगों ने उन पर ब्रिटिश एजेण्ट होने तक के आरोप लगाये लेकिन उच्च आदर्श के एक सच्चे योद्धा की तरह वे अडिग रहे और विजयी रहे। उनके इन सभी कार्यों का उस समय के रूढिवादी लोगों ने विरोध किया। लेकिन उनकी निष्ठा और भारत तथा भारतीय संस्कृति के प्रति उनका समर्पण का भाव सदैव उनको शक्ति प्रदान करता रहा। उनके राजनैतिक सुधार कार्यों में प्रेस व विचार सम्बन्धी अभिव्यक्ति की स्वतन्त्रता, प्रशासन सम्बन्धी सुधार हैं, जिनमें जमींदारों से लगान की दरें कम कराया जाना, कृषि सुधार, भारत सरकार का प्रशासनिक व्यय कम करना है। एक शिक्षाविद की तरह राजा राममोहन राय ने ग्रीक, अंग्रेजी, बंगला, संस्कृत, अरबी, पारसी व गुरुमुखी का ज्ञान भी प्राप्त किया। उन्होंने 1816–17 में अंग्रेजी स्कूल की भी स्थापना की।[5]

यहाँ यह कहना भी उचित है कि जब राजा राममोहन राय 15 वर्ष के थे, तब उन्होंने बंगाल में एक छोटी सी पुस्तिका लिखी थी, जिसमें उन्होंने मूर्तिपूजा का खंडन किया था, जिसके सम्बन्ध में उनका कहना था कि वह वेदों में नहीं है। नवयुवक राममोहन को इसके लिए बहुत कष्ट उठाने पडे। उन्हें कट्टरवादी परिवार से निकाल दिया गया और उन्हें देश निकाले के रूप में अपना जीवन व्यतीत करना पड़ा। तथापि उन्होंने ईश्वर प्रदत्त परिस्थितियों से पूर्ण लाभ उठाया। उन्होंने दूर–दूर तक यात्राएं की और इस प्रकार बहुत सा ज्ञान और अनुभव संचित किया। उन्होंने तिब्बत यात्रा की तो उनके क्रान्तिकारी विचारों के कारण वहीं के लामा भी उनके विरोधी हो गये। एकेश्वरवादी राजा राममोहन राय ने जैन, इस्लाम आदि धर्मों का भी अध्ययन किया था। वे संसार के महत्वपूर्ण धर्मग्रन्थों का मूल रूप में अधययन करने में समर्थ थे। इस कारण वे संसार के सब महत्वपूर्ण धर्मों की तुलना करने में सफल हो सके। विश्वधर्म को उनकी धारणा किन्हीं संश्लिष्ट सिद्धांतों पर आधारित नहीं श्री, बल्कि विभिन्न धर्मों के गम्भीर ज्ञान पर ही आधारित थी। उन्होंने वेदों और उपनिषदों का बंगला अनुवाद किया। वेदान्त के उपर अंग्रेजी में लिखकर उन्होंने यूरोप तथा अमेरिका में भी बहुत ख्याति अर्जित की।[6]

ब्रह्मसमाज की स्थापना

चूंकि समाज सुधार की टीस राजा राममोहन राय के मन में लम्बे समय से थी, अतः उन्होंने 1821 में 'यूनीटेरियन एसोसिएशन' की स्थापना की। हिन्दू समाज की कुरीतियों के घोर विरोधी होने के कारण 1828 में उन्होंने 'ब्रह्म समाज' नामक एक नये प्रकार के समाज की स्थापना की। 1805 में राजा राममोहन राय बंगाल में अंग्रेजी ईस्ट हंडिया कम्पनी की सेवा में सम्मलित हुए और 1814 तक वे इसी कार्य में लगे रहे। नौकरी से अवकाश प्राप्त करके वे कलकत्ता में स्थायी रूप से रहने लगे और उन्होंने पूर्ण रूप से अपने को जनता की सेवा में लगाया। 1814 में उन्होंने आत्मीय सभा को आरम्भ किया। 20 अगस्त 1828 में उन्होंने ब्रह्मसमाज की स्थापना की।[7]

यह बात सर्वविदित है कि राजा राममोहन रॉय ने ईस्ट इंडिया कंपनी में नौकरी छोड़ने के बाद अपना सारा जीवन राष्ट्र सेवा में झोंक दिया। भारत की स्वतन्त्रता प्राप्ति के अलावा वे दोहरी लडाई लड़ रहे थे। दूसरी लड़ाई उनकी अपने ही देश के नागरिकों से थी जो अंधविश्ववास और कुरीतियों में जकड़े थे। राजा राममोहन राय ने उन्हें झकझोरने का काम किया। बाल–विवाह, सती प्रथा, जातिवाद, कर्मकांड, पर्दा प्रथा आदि का उन्होंने भरपूर विरोध किया। धर्म प्रचार के क्षेत्र में अलेवजेंडर ने उनकी काफी सहायता की। द्वारका नाथ टैगोर उनके सबसे प्रमुख अनुयायी थे।वे अपने समय के सबसे बडे प्राच्य भाषों के ज्ञाताओं में से एक थे। उनका विश्वास था कि भारत की प्रगति केवल उदार शिक्षा के द्वारा होगी, जिसमें पाश्चात्य विद्या तथा ज्ञान को सभी शाखाओं की शिक्षण व्यवस्था हो। उन्होंने ऐसे लोगों का पूर्ण समर्थन किया, जिन्होंने अंग्रेजी भाषा तथा पश्चिमी विज्ञान के अध्ययन का भारत में आरम्भ किया और वे अपने प्रयत्नों में सफल भी हुए। उन्होंने हिन्दू कॉलिज की स्थापना में सहायता दी। यह संस्था उन दिनों की सर्वाधिक आधुनिक संस्था थी। तब जनता को अपने नागरिक अधिकारों का कोई ज्ञान न था और विदेशी हुकूमत के सामने अपनी बात रखने की सोचता भी न था तब राजाराम मोहन राय ने राजनीतिक जागरण में अपना अमूल्य योगदान दिया अपने ओजपूर्ण राजनीतिक विचारों को शासन सत्ता के केन्द्र तक पहुंचाने में कामयाब रहे। भारत में राजनीतिक और सामाजिक चेतना जमाने के कारण ही उन्हें नये भारत का संदेश वाहक कहा जाता है। सुरेन्द्र नाथ बनर्जी ने उन्हें संवैधानिक जागरूकता का जनक कहा था।

राजा राममोहन राय ने पत्रकारिता के माध्यम से समाजसुधार का बीड़ा उठाया और लोगों में चेतना पैदा करने की दिशा में अहम् योगदान दिया। उन्होंने 'ब्रह्ममैनिकल मैग्जीन', 'संवाद कौमुदी', मिरात–उल–अखबार, बंगदूत जैसे स्तरीय पन्नें का संपादन–प्रकाशन किया। बंगदूत एक अनोखा पत्र था। इसमें बांग्ला, हिन्दी और पारसी भाषा का प्रयोग एक साथ किया जाता था। उनके जुझारू और सशक्त व्यक्तित्व का इस बात से अंदाजा लगाया जा सकता है कि सन् 1821 में अँग्रेज जज द्वारा एक भारतीय प्रतापनारायण दास को कोडे लगाने की सजा दी गई। फलस्वरूप उसकी मृत्यु हो गई। इस बर्बरता के खिलाफ राजा राममोहन राय ने एक लेख लिखा। उनके इस योगदान के लिए एक विद्वान ने लिखा है कि राजाराममोहन राय को आधुनिक युग का निर्माता, आधुनिक भारत का जनक इसलिए कहा जाना उचित है, क्योंकि उन्होंने देश व जाति–उत्थान के लिए महान कार्य किये। मानवता के लिए किये गये उनके कार्यों के लिए भारत उनका हमेशा कर्जदार रहेगा।[8]

मूल्यांकन

राजा राम मोहन राय के जीवन की सबसे बड़ी उपलब्धि थी– सती

[4] श्रीराम शर्मा, राजा राममोहन राय, 2007.

[5] आभा नवनी, भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत, राजा राममोहन राय, 2013.

[6] विजय कुमार दत, राजा राममोहन राय, 2002.

[7] गिरजा शंकर व अन्य, राजा राममोहन राय, ए बॉयोग्राफीः ए न्यू अप्रोच, 2011.

[8] बी कुरकुरे, राजा राममोहन राय, 2008.

प्रथा का निवारण। उन्होंने ही अपने अथक प्रयासों से सरकार द्वारा इस कुप्रथा को गैंर–कानूनी दण्डनीय घोषित करवाया। उन्होंने समाचार पत्रों की स्वतंत्रता के लिए भी कड़ा संघर्ष किया था। उन्होंने स्वयं एक बंगाली पत्रिका 'सम्वाद–कौमुदी' आरम्भ की और उसका सम्पादन भी किया। यह पत्रिका भारतीयों द्वारा सम्पादित सबसे पुरानी पत्रिकाओं में से थी। 1831 में एक विशेष कार्य के सम्बंध में दिल्ली के मुगल सम्राट के पक्ष का समर्थन करने के लिए इंग्लैड गये। वे उसी कार्य में व्यस्त थे कि ब्रिस्टल में 27 सितंबर हैं 1833 को उनका देहान्त हो गया। राजनीति, लोक प्रशासन, शिक्षा सुधार, समाज सुधार, धार्मिक पुनर्जागरण के क्षेत्रों में किये गए उनके कार्य उनको भारत को एक विभूति की श्रेणी में खड़ा करते है। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार, राजा राममोहन राय ने भारत में आधुनिक युग का सूत्रपात किया। उन्हें भारतीय पुनर्जागरण का पिता तथा भारतीय राष्ट्रवाद का प्रवर्तक भी कहा जाता है। उनके धार्मिक, सामाजिक समरसता जैसे विचारों के पीछे अपने देशवासियों की राजनीतिक उन्नति करने की भावना मौजूद रहती थी। अंग्रेजी शासन, अंग्रेजी भाषा एवं अंग्रेजी सभ्यता की प्रशंसा करने के लिए राज राममोहन राय की आलोचना की जाती है। उन्होंने स्वतंन्ता आन्दोलन में कोई प्रत्यक्ष भाग नहीं लिया। उनकी अन्तिम सांस भी ब्रिटेन में निकली। कुछ तीनों का विचार है कि वे अपनी जमींदारी को चमकाते हुए भारतीय समाज में हीन भावना भरने का कार्य कर रहे थे और अंग्रेजों के अदृश्य सिपाही थे। उन्होंने भारत में अंग्रेजी राज्य गुलामी की स्थापना एवं उसके सशक्तीकरण के लिए रास्ता तैयार किया। वे अंग्रेजी कूटनीति को समझ नहीं सकै और भारतीय जनता का सही मार्गदर्शन नहीं कर सके।

राजा राममोहन राय ने जब समाज में व्याप्त सती प्रथा को देखा तो विचलित और द्रवित हो उठे। समाज में इस प्रकार की कुरीतियों के उन्मुलन के लिए उन्होंने जो भी प्रयास किए उन्हें प्रारंभ में समाज ने नहीं स्वीकारा और वे बहिष्कृत कर दिए गए। समाज के इस विरोध के कारण ही उनको माता–पिता ने घर से निकाल देने में ही अपनी भलाई समझो। इसके बाद राजा राममोहन राय तिब्बत चले गए। वहां भी उन्होंने समाज को अंधविश्वास की चपेट में जकड़े हुए देखा। अपने क्रांतिकारी स्वभाव के कारण उन्होंने तिब्बत में भी एक परिष्कारक के रूप में स्वयं को प्रस्तुत किया। इसका परिणाम यह हुआ कि उन्हें तिब्बत छोड़कर पुनः बंगाल लौटना पड़ा। लेकिन उन्होंने हार नहीं मानी और अपने मंजिल को पाने के लिए प्रयास करते रहे। उन्होंने लार्ड विलियम बैंटिक से मिलकर सती प्रथा को समाप्त करने का अपना संकल्प शासनादेश जारी कराकर पूर्ण कर दिया। महिलाओं की कारुणिक परिस्थितियों पर तब लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ और लोग राममोहन राय को एक समाज सुधारक के रूप में जानने लगे। इसके बाद एक समय ऐसा भी आया कि साधारण जनता भी उनको राजा राममोहन राय के रूप में संबोधित करने लगी। सिर्फ सती प्रथा को रोकना ही नहीं राजा राममोहनराय ने देश में मूर्ति पूजा, प्रेस की आजादी जैसे विभिन्न सामाजिक पहलुओं की प्रति भी जागरुकता पैदा की।

सारांश

इस तरह राजा राममोहन राय ने हिन्दू समाज की कुरीतियों के घोर विरोधी होने के कारण 1828 में उन्होनें ब्रह्म समाज नामक एक नए प्रकार के समाज की स्थापना की तथा वे आजीवन रूढिवादी रिवाजों को दूर करने के लिए प्रयासरत्त रहे। उनके प्रयास आज भी सराहे जाते हैं। आज हम जिस युग में जी रहे हैं उसकी कल्पना समाज के महापुरुषों के बिना अधूरी है, इतिहास के कईं स्वर्णिम पलों पर हमें ऐसे महापुरुषों की कहानी पढ़ने के मिलेगी जिन्होंने अपनी क्षमता, कूदर्शिता और सूझ–बूझ से देश को नईं राह दी। ऐसे ही महापुरुषों में से एक थे –राजा राम मोहन राय। वे अपनी विलक्षण प्रतिभा से समाज में फैली कुरीतियों के परिष्कारक और ब्रहा समाज के संस्थापक के रूप में निर्विवाद रूप से प्रतिष्ठित हैं। राजा राममोहन राय सिर्फ सती प्रथा का अंत कराने वाले महान समाज सुधारक ही नहीं, बल्कि एक महान दार्शनिक और विद्वान भी थे। राजा राममोहन राय आधुनिक भारत के रचयिता के नाम से जाने जाते हैं। वे ब्रहा ममाज के संस्थापक थे, जो भारत का समाजवादी आन्दोलन भी था। सती की प्रथा को बंद कराने में उनकी अहम भूमिका रही है। राजा राममोहन राय एक महान विद्वान और स्वतंत्र विचारक थे, जिनका नाम आज भी भारतीय इतिहास के पन्नों में स्वर्ण अक्षरों में अंकित हैं और वे भारतीय पुनर्जागरण के संस्थापक युग पुरूष के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

सन्दर्भ सूची

1. विजय चौगुले, राजा राम मोहन राय, 1994.
2. संजय गोयल, राजा राम मोहन राय, 1999.
3. समाज सुधारक राजा राम मोहन राय, 1998.
4. विजित कुमार दत्त, राजा राम मोहन राय, 2002.
5. राजा राम मोहन राय, इरा ऑफ सोशियो इकोनॉमिक रिफार्म, 2003.
6. बी कुरकुरे, राजा राम मोहन राय, 2005.
7. विनोद तिवारी, राजा राम मोहन राय, 2005.
8. श्रीराम शर्मा आचार्य, राजा राम मोहन राय, 2009.
9. केसी दत्त, राजा राम मोहन रायः जीवन और दर्शन, 2010.
10. गिरिराज शंकर राय चौधरी एवं अरुणा, राजा राम मोहन राय, ए बायोग्राफीः ए न्यू अप्रोच, 2011.
11. राजा राम मोहन राय, ए क्रिटिकल बॉयोग्रॉफी, 2012.
12. आभा नवनी, भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूत, राजा राम मोहन राय, 2013.